अनुक्रमणिका

सारांशिका *i-v*
प्राक्कथन *viii-ix*
आभार *x-xi*
प्रथम अध्याय 1-47

समकालीन उपन्यास :: सर्वेक्षण संदर्भ

1.0 भूमिका

1.1 समकालीन का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा

1.1.1 आधुनिकता

1.1.2 समकालीनता का सीमांकन

1.2 समकालीन हिन्दी उपन्यास और मुस्लिम-संदर्भ

1.3 समकालीन उपन्यास और उसकी प्रवृत्तियाँ

1.3.1 नव औपनिवेशिक स्थितियाँ

1.3.1.1 उपभोग-संस्कृति

1.3.1.2 ब्रांड-संस्कृति

1.3.1.3 विज्ञापन-संस्कृति

1.3.1.4 साम्राज्यवाद

1.3.1.5 नव उपनिवेशवाद में स्त्री

1.3.1.6 औपनिवेशिक परिस्थिति द्वारा निर्मित व्यक्ति

1.3.1.7 उपभोग संस्कार में रिश्ते नाते की शिथिलता एवं मूल्यह्रास

1.3.2 विस्थापन का यथार्थ

1.3.2.1 भारत विभाजन से उत्पन्न विस्थापन

1.3.2.2 शरणार्थियों तथा मोहाजिरों की समस्यायें

1.3.2.3 विकास योजनाओं से उत्पन्न विस्थापन

1.3.2.4 राजनीतिक और प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न विस्थापन

1.3.2.5 हिन्दी उपन्यासों में अन्तर्राष्ट्रीय विस्थापन

1.3.2.6 गिरमिटिया मजदूरों का जीवन संघर्ष

1.3.2.7 नस्लवाद एवं रंगभेद

1.3.2.8 सांस्कृतिक टकराहट

1.3.3 **समकालीन उपन्यास और स्त्री-विमर्श**

1.3.3.1 परिवार में स्त्रियों का शोषण

1.3.3.2 नौकरी पेशा स्त्री

1.3.3.3 स्त्रियों का विद्रोह

1.3.3.4 अस्मिता बोध

1.3.4 **समकालीन उपन्यास और दलित-विमर्श**

1.3.4.1 दलित साहित्य

1.3.4.2 हिन्दी दलित साहित्य

1.3.4.3 दलित उपन्यासों में विद्रोह

1.3.4.4 नारी शोषण

1.3.4.5 धार्मिक शोषण

1.3.4.6 प्रगतिशील चेतना

1.3.4.2 राजनीतिक स्वत्व

1.4 संदर्भ ग्रंथ-सूची

द्वितीय अध्याय 48-105

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार और उनका उपन्यास-साहित्य :: परिचयात्मक-संदर्भ

2.0 भूमिका

2.1 हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार

2.1.1 मेहरुन्निसा परवेज : परिचयात्मक-संदर्भ

2.1.2 नासिरा शर्मा : परिचयात्मक-संदर्भ

2.2 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का परिचय

2.2.1 आँखों की दहलीज

2.2.2 उसका घर

2.2.3 कोरजा

2.2.4 अकेला पलाश

2.2.5 समरांगण

2.2.6 पासंग

2.3 नासिरा शर्मा के उपन्यासों का परिचय

2.3.1 सात नदियां : एक समन्दर

2.3.2 शाल्मली

2.3.3 ठीकरे की मंगनी

2.3.4 जिन्दा मुहावरे

2.3.5 अक्षयवट

2.3.6 कुइयांजान

2.3.8 पारिजात

2.3.9 अजनबी जज़ीरा

2.3.10 कागज की नाव

2.4 संदर्भ ग्रंथ-सूची

तृतीय अध्याय 106-136

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का कथ्य-पक्ष

3.0 भूमिका

3.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में वर्णित पात्र एवं परिवेश

3.1.1 उपन्यासों में वर्णित पात्रों का विद्रोह

3.1.2 उपन्यासों में वर्णित सामाजिक परिवर्तन के विविध रूप

3.1.3 उपन्यासों में वर्णित जीवन की वास्तविकता और जीवन मूल्य

3.1.4 उपन्यासों में वर्णित अधिकारोन्मुख विचार

3.1.5 उपन्यासों में वर्णित ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता

3.1.6 उपन्यासों में वर्णित मानवीय चेतना एवं वैचारिकता

3.1.7 उपन्यासों में वर्णित आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय

3.1.8 उपन्यासों में वर्णित वैश्विकता

3.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में वर्णित पात्र एवं परिवेश

3.2.1 उपन्यासों में वर्णित पात्रों का विद्रोह

3.2.2 उपन्यासों में वर्णित सामाजिक परिवर्तन के विविध रूप

3.2.3 उपन्यासों में वर्णित जीवन की वास्तविकता और जीवन मूल्य

3.2.4 उपन्यासों में वर्णित अधिकारोन्मुख विचार

3.2.5 उपन्यासों में वर्णित ऐतिहासिकता एवं राष्ट्रीयता

3.2.6 उपन्यासों में वर्णित मानवीय चेतना एवं वैचारिकता

3.2.7 उपन्यासों में वर्णित आदर्श एवं यथार्थ का समन्वय

3.2.8 उपन्यासों में वर्णित वैश्विकता

3.3 संदर्भ ग्रंथ-सूची

चतुर्थ अध्याय **137-169**

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक-पक्ष

4.0 भूमिका

4.1 वैचारिक पक्ष के धरातल पर मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यास

4.2 सामाजिक पक्षों की तुलना

4.3 राजनीतिक पक्षों की तुलना

4.4 सांस्कृतिक पक्षों की तुलना

4.5 आर्थिक पक्षों की तुलना

4.6 मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में समानता

4.5 मेहरुन्निसा परवेज और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में विषमता

4.7 **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

पंचम अध्याय 170-223

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

5.0 भूमिका

5.1 शिल्प-पक्ष

5.2 औपन्यासिक शिल्प पक्ष – शब्द, वाक्य, प्रतीक एवं भाषा शैली

5.2.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

5.2.1.1 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत / तत्सम, उर्दू एवं देशज शब्दों का प्रयोग

5.2.1.2 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्य

5.2.1.3 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें

5.2.1.4 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त प्रतीक

5.2.1.5 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त पात्रानुकूल-भाषा

5.2.1.6 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त अलंकारिक-भाषा

5.2.1.7 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त वर्णनात्मक-शैली

5.2.1.8 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त पत्रात्मक-शैली

5.2.1.9 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त नाट्य-शैली

5.2.1.10 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त तर्क-वितर्क-शैली

5.2.1.11 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त आत्मकथात्मक-शैली

5.2.1.12 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक-शैली

5.2.1.13 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त व्यंग्यात्मक-शैली

5.2.1.14 मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में प्रयुक्त भावात्मक-शैली

5.2.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों का शिल्प-पक्ष

5.2.2.1 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अंग्रेजी, संस्कृत / तत्सम, उर्दू एवं देशज शब्दों का प्रयोग

5.2.2.2 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्य

5.2.2.3 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरें और कहावतें

5.2.2.4 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त प्रतीक

5.2.2.5 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त पात्रानुकूल भाषा

5.2.2.6 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा

5.2.2.7 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त वर्णनात्मक-शैली

5.2.2.8 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त पत्रात्मक-शैली

5.2.2.9 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त नाट्य-शैली

5.2.2.10 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त तर्क-वितर्क-शैली

5.2.2.11 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त आत्मकथात्मक-शैली

5.2.2.12 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक-शैली

5.2.2.13 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त व्यंग्यात्मक-शैली

5.2.2.14 नासिरा शर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त भावात्मक-शैली

5.3 संदर्भ ग्रंथ-सूची

उपसंहार 224-229

परिशिष्ट 230-233

ग्रंथानुक्रमणिका 234-238